कलायण काव्य का कलापक्ष →

कलापक्ष के अन्तर्गत काव्य के छंद, अंलकार, भाषा, शैली, आदि तत्व ~~तत्वों को~~ कलापक्ष के मुख्य आधार है' कलायण काव्य के अन्तर्गत इन चारों ही तत्वों का पूर्ण रूप से प्रयोग किया गया है।

कलायण काव्य में मुक्तक छंद से अभिप्राय प्रत्येक छंद का अपने आप में परिपूर्ण होकर अर्थ की अभिव्यक्ति करते हुए रस की अनुभूति करता है। तथा अपने आगे व पीछे के छंद से ~~उसका~~ क्या नही होता है।

Scanned by CamScanner

दुसरी विशेषता यह है कि काव्य के प्रत्येक छंद में छुआच्छवर (चुंआ) छंद का प्रयोग हुआ है जिसके प्रथम व द्वितीय चरण है। 13-13 मात्राएँ और विषयवस्तु चौथे चरण में है।।-।। मात्राएँ होती है और वह छंद चार चरणो में होता है।

"काव्य लिखने की रिति को छंद कहते है इस प्रकार कलायण काव्य ~~को~~ छंदोंगत काव्य है।"

⇒ अलंकार ⇒

अलंकार काव्य की शोभा होते है काव्य में शब्द अलंकारों व अर्थ अलंकारों का रूप समाहित किया है। शब्द अलंकार में शब्दों का चमत्कार होता है और अर्थ अलंकार में शब्द के अर्थ में चमत्कार होता है।

इस प्रकार काव्य में दोनो अलंकारों का प्रयोग छंदों में होता है। काव्य में अलंकारों के साथ ही शब्द शक्तियों का प्रयोग किया जाता है।

ये शब्द शक्तियाँ तीन प्रकार की होती है। :-

(1) अभिधार,

(2) लक्ष्यणा,

(3) व्यांजना,

Scanned by CamScanner

अभीधार शब्द शक्ति में शब्द से स्वत: अर्थ प्रकट होता है तथा लक्ष्यणा शब्द शक्ति में शब्द से अर्थ प्रकट न होकर क्रमश से अर्थ प्रकट होता है तथा व्यंजना शब्द शक्ति से शब्द से और अर्थ से भाव या अर्थ प्रकट होता है

अर्थात 'व्यंग्यार्थ' के साथ द्वारा अन्य अर्थ निकलता है वहाँ पर व्यंजना शब्द शक्ति होती है।

उदाहरण ÷

1. अुमसओग में निहित भाव का वर्णन प्रकृति पर जनजीवन पर और पशु-पक्षियों पर 'गर्मी के कारण पड़ता है प्रभाव।

2. बिजलवेल कलायण के रूप सौन्दर्य का वर्णन होता है जिसमें वर्षा ऋतु पर नई नवेली दुल्हन का रूप एवं जनजीवन व पशु-पक्षियों का वर्णन आता है

3. व्युंआस्वर के अन्तर्गत ठण्डी हवाओं का चलना 'ओस का झरना 'पाला पड़ना आदि होता है

4. मरुधर मंगल में गाँव की सभ्यता, संस्कार एवं एकता का वर्णन निहित किया जाता है

Scanned by CamScanner

भाषा शैली ÷

भाषा काव्य लिखने का माध्यम है जिसमें कवि अपने भावो को शब्दो के माध्यम से अभिव्यक्त करता है।

"कलापण काव्य की भाषा आधुनिक राजस्थानी है"

शैली ⇒

काव्य के लिखने की ~~विधि~~ विधि है, जिसे शैली कहते हैं। और प्रत्येक कवि की काव्य लिखने की अपनी - अपनी एक शैली होती है।

"शैली मे लेखक के अंचल विशेष का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।"

शब्द चयन ⇒

शब्द चयन में लेखक ने मारवाड़ी, हिन्दी, उर्दू शब्दों का सटीक रूप से काव्य के अनुसार प्रयोग किया है।

काव्य शोस्टक ⇒

काव्य शोस्टक का अर्थ भावपक्ष तथा कलापक्ष का सम्मिलित रूप होता है।

"मुक्तक काव्य की दृष्टि से कलापण काव्य उत्कृष्ट काव्य कृति है कवि ने काव्य को चार भागों में विभाजित किया है।" ⟶

1. ऊमस ओग, 2. धुंआधवर,
3. बिजलवेल, 4. मकरधर मगेल,

Scanned by CamScanner

इन चारों भागों में कवि ने प्रकृति की आठ ऋतुओं का समग्र रूप से वर्णन किया है, प्रत्येक ऋतु का जन्म आने वाली ऋतु से होता है, उसमें किस प्रकार प्रकृति, वनस्पति, जनजीवन और पशु-पक्षियों का प्रभाव पड़ता है।

कवि ने मुक्तक छंद के माध्यम से सार्थक रूप का भाव अभिव्यक्त करने का प्रयास किया है। इस प्रकार कलायन काव्य को मुक्तक काव्य की श्रेणी में रखा गया है।

Scanned by CamScanner